

इस मौजू (विषय) पर उलेमा की राय

- इमाम नववी (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "हालाँकि नबी ﷺ ने इस अमल को बहुत सख्ती से लागू किया था, लेकिन लोगों ने सफ़ों को सीधा करने और एक-दूसरे के करीब खड़े होने की सुन्नत को छोड़ दिया और इस पर ध्यान देना बंद कर दिया।" (लिसानुत्तालिबिन, 2/28)
- शैखुल इस्लाम इब्र तैमिया (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "यक़ीनी तौर पर नबी ﷺ ने सफ़ को सीधा करने, खाली जगहों को भरने, पहली सफ़ को पूरा करने और फिर दूसरी सफ़ को पूरा करने का हुक्म दिया। और इमाम को बीच में होना चाहिए।" (मजमू अल-फतवा अल-मिस्रिया, पेज 59)
- शैख उसैमीन (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "(अल्लाह तुम्हारे बीच इख़िलाफ़ पैदा कर देगा)—यह एक तम्बीह है। और तम्बीह उसी काम पर होती है जो हराम हो। इसलिए सफ़ों को सीधा करना फ़र्ज़ है।" (मजमू अल-फतवा, 13/22)
- शैख बिन बाज़ (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "नमाज़ पढ़ने वालों के लिए सफ़ों को तरतीब देना और खाली जगहों को भरना फ़र्ज़ है। उन्हें एक-दूसरे के करीब खड़ा होना चाहिए और पैर से पैर मिलाना चाहिए।" (मजमू अल-फतवा, 12/200)
- शैख बिन बाज़ (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "इमामों के लिए जरूरी है की वो हर नमाज़ से पहले सफ़ों को सीधा करने की हिदायत दें और इसकी तरगीब दें।" (मजमू फतवा, 12/203)
- इमाम अस-सुयूती (रहिमहुल्लाह) ने कहा: "सीधी सफ़ें उन खाली जगहों को रोकती हैं जिनसे शैतान आकर लोगों के बीच इतिहाद को बिगाड़ सकता है।" (अल-हावी लिल-फ़तावा, 1/52)

सही सफ़ बनाने के फायदे

- इतिहाद और भाईचारा मज़बूत होता है।
- इबादत में पाबंदी और आजिज़ी पैदा होती है।
- जमाअत में शैतान की तरफ़ से होने वाली गड़बड़ी रुकती है।

- नबी ﷺ और सहाबा की सुन्नत महफूज़ रहती है।

नतीजा

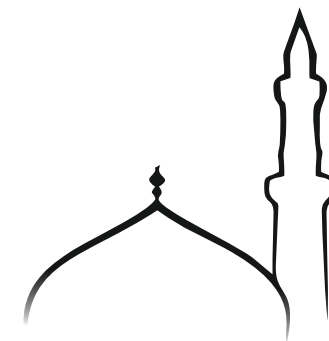
सफ़ों को सही तरीके से सीधा करना एक ज़ोर देकर बताई गई सुन्नत है, जिसे कई उलेमा ने फ़र्ज़ कहा है। नबी ﷺ और उनके सहाबा इस मामले में बहुत पाबंदी से अमल करते थे। हर मुसलमान को इस अमल को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए और इस भूली हुई सुन्नत को फिर से ज़िंदा करना चाहिए। इससे उम्मत को सवाब और इतिहाद दोनों हासिल होंगे।

आखिर में, शैख अल्बानी (रहिमहुल्लाह) की मुसलमानों से अपील

"मैं मुसलमानों और खास तौर पर उन मस्जिदों के इमामों से अपील करता हूँ जो नबी ﷺ की पैरवी करने के लिए पुरजोश हैं, कि वे इस सुन्नत को लागू करें और लोगों को इसकी तरफ़ बुलाएँ। ताकि सभी लोग मिलकर इस पर अमल करें और इस हदीस में दी गई तम्बीह से बच जाएँ—कि 'अल्लाह उनके दिलों के बीच इख़िलाफ़ पैदा कर देगा।'" (सिलसिलतुल अहादीस अस-सहीहा, 1/73)

नोट

ऊपर बताई गई हमारे प्यारे नबी ﷺ की इस सुन्नत पर अमल करने का तरीका यह है कि हम अपने पैरों को क़िबला की तरफ़ सीधा रखें और दोनों पैरों के बीच का फर्क कंधों की चौड़ाई के बराबर रखें, पैरों को V के आकार में न रखें।



आइए इस सुन्नत को फिर से ज़िंदा करें

सफ़ को सिधा करने का अमल

ज़ेया ख़ान

अनुवाद : मुज़म्मिल शादाब

CENTRE FOR ISLAMIC RESEARCH

Near Water Pump House, New Parastoli,
Doranda, Ranchi-834002, Jharkhand, India

E-mail: info.cirglobal@gmail.com

🌐 cirglobal.org 📺 @CirGlobal 📷 cirglobal

मेरे सफ़र और मुख़लिफ़ मस्जिदों में जाने के दौरान मैंने एक ज़रूरी सुन्नत को छोड़े जाते हुए देखा है—जिसे कई उलेमा ने फ़ज़्र कहा है, वह है नमाज़ के दौरान सफ़ को सीधा करना।

सिर्फ़ आम मुसलमान ही नहीं, बल्कि कई इमाम और उलेमा भी इस सुन्नत को छोड़ चुके हैं। वे सिर्फ़ “सफ़ सीधी कर लें” कहकर नमाज़ शुरू कर देते हैं, लेकिन नबी ﷺ के उस तरीके को नहीं अपनाते जिसमें सफ़ को अमली तौर से सीधा किया जाता था, जैसा कि सहाबा अमल करते थे। इस सुन्नत की बहुत ज्यादा ताकीद करने वाली कई हदीसों मौजूद हैं।

सफ़ को सीधा करने की अहमियत और उसके अमल के बारे में कुछ हदीसों इस तरह हैं:

1. इमाम बुखारी (रहिमहुल्लाह) ने अपनी सहीह में “किताबुल अज़ान” के तहत बाब नंबर 75 में यह हेडिंग दिया है: “जो शख्स नमाज़ के लिए सफ़ पूरी नहीं करता (या सफ़ में सीधा खड़ा नहीं होता), उसके गुनाह का बयान।” इस बाब में उन्होंने यह हदीस बयान की है:
 - अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है: “मैं मदीना आया और मुझसे पूछा गया कि क्या मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ के ज़माने के बाद कोई बदलाव देखा है? मैंने कहा: ‘मैंने कोई बदलाव नहीं देखा, सिवाय इसके कि अब तुम लोग नमाज़ में एक सीध में खड़े नहीं होते।’” (सहीह अल-बुखारी, 1/724)
- अगले बाब (76) में इमाम बुखारी (रहिमहुल्लाह) ने हेडिंग दिया: “सफ़ में कंधे से कंधा और पैर से पैर मिलाकर खड़ा होना।” इसके तहत यह हदीस है:
 - अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है: नबी ﷺ ने फरमाया: “अपनी सफ़ों को सीधा करो, क्योंकि मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से भी देखता हूँ।” अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आगे कहा: “हममें से हर शख्स अपने साथी के कंधे से अपना कंधा और उसके पैर से अपना पैर मिलाकर रखता था।” (सहीह अल-बुखारी, 1/725)

2. जाबिर बिन समुरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया: अल्लाह के रसूल ﷺ हमारे पास आए और फरमाया: “तुम लोग उसी तरह सफ़ में सीधे क्यों नहीं खड़े होते, जैसे फ़रिश्ते अपने रब के सामने सफ़ में खड़े होते हैं?” हमने पूछा: “अल्लाह के रसूल ﷺ! फ़रिश्ते अपने रब के सामने किस तरह सफ़ में खड़े होते हैं?” आप ﷺ ने फरमाया: “वे पहली सफ़ों को पूरा करते हैं और सफ़ों में एक-दूसरे से सटकर खड़े होते हैं।” (सहीह मुस्लिम, 430a)
3. अल-बरा बिन आज़िब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया: अल्लाह के रसूल ﷺ सफ़ों के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाते थे और हमारे सीने और कंधों को ठीक करते थे, और फरमाते थे: “बेतरतीब मत खड़े हो।” (सुनन अबू दाऊद, 664)
4. नुअमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया: “नबी ﷺ हमारी सफ़ों को सीधा करते थे। जब हम सीधे हो जाते थे, तो आप ﷺ तकबीर कहते थे।” (सुनन अबू दाऊद, 665)

अपने हुक्म की पैरवी न करने पर रसूल ﷺ की सख़्त तम्बीह

- नुअमान बिन बशीर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया कि नबी ﷺ ने फरमाया: “अपनी सफ़ों को सीधा करो, वरना अल्लाह तुम्हारे चेहरों को बदल देगा।” (सहीह अल-बुखारी, 717)
- नुअमान बिन बशीर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया: मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को यह कहते हुए सुना: “अपनी सफ़ों को सीधा करो, वरना अल्लाह तुम्हारे बीच इख़िलाफ़ (अलगाव/गुटबंदी) पैदा कर देगा।” (सहीह मुस्लिम, 436a)
- अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया: “अपनी सफ़ों को सीधा करो, क्योंकि सफ़ को सीधा करना नमाज़ के सही होने का एक हिस्सा है।” (सहीह मुस्लिम, 433)
- अबू मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया: अल्लाह के रसूल ﷺ नमाज़ के वक़्त हमारे कंधों को छूकर फ़रमाते थे, “सीधे खड़े हो जाओ और एक-दूसरे से अलग-अलग मत खड़े हो, वरना

तुम्हारे दिलों में इख़िलाफ़ पैदा हो जाएगा और तुम्हारे बीच फूट पड़ जाएगी।” (सहीह मुस्लिम, 432a)

- इब्र उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने बयान किया: नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सफ़ों को सीधा करो, कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो, दरमियान में फ़ासला न रहने दो और अपने भाइयों के साथ नरमी का मामला करो। और शैतान के लिए खाली जगह न छोड़ो। जिसने सफ़ को मिलाया, अल्लाह उसे मिलाए और जिसने सफ़ को काटा अल्लाह उसे काटे।” (सुनन अबू दाऊद, 666)

सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का सफ़ों को सीधा करने का अमल

1. अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बताया: नबी ﷺ ने फरमाया: “अपनी सफ़ों को सीधा करो, क्योंकि मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से देखता हूँ।” अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आगे कहा: “हममें से हर शख्स अपने साथी के कंधे से अपना कंधा और उसके पैर से अपना पैर मिलाकर रखता था।” (सहीह अल-बुखारी, 725)
 2. अबू उस्मान अन-नहदी ने बताया: उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) सफ़ों को सीधा करने का हुक्म देते थे और फिर कहते थे: “ऐ फ़लाँ-ऐ फ़लाँ! आगे बढ़ो।” (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़ाक, 2494)
 3. नाफ़े ने बताया: “उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कुछ लोगों को सफ़ों को सीधा करने का हुक्म देते थे। जब उन्हें बताया जाता कि सफ़ें सीधी हो गई हैं, तो वे तकबीर कहते थे।” (मुवत्ता इमाम मालिक, 376)
 4. अबू उस्मान ने बताया: “मैंने उमर बिन ख़त्ताब को देखा। जब वे नमाज़ के लिए आगे बढ़ते थे, तो वे लोगों के कंधों और पैरों को देखते थे।” (अल-मुअज़म अल-अवसत, 2436)
- इसी तरह के अमल उस्मान, अली और दूसरे सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से भी बताए गए हैं।